Semester II

Hindi Pedagogy. 7A

Unit: (iv) 3. निदानात्मक एवं उपचारात्मक कार्य / शिक्षण

a. निदानात्मक परीक्षाओं का अर्थ और महत्व
b. कठिनाइयों के कारण
c. निदानात्मक परीक्षाएँ
d. वाचन की- निदानात्मक परीक्षाएँ
e. कठिनाइयों का निदान
f. वाचन की- परीक्षाएँ
g. उपचारात्मक शिक्षण
h. अनुवर्ग शिक्षण

By: —

Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

# अनुवर्ग शिक्षण

उपचारात्मक शिक्षण का प्रयोग शिक्षक द्वारा कक्षा के छात्रों को पुनर्शिक्षण के लिये किया जाता है। इसके अतिरिक्त अनुवर्ग-शिक्षण (Tutorial System) में भी छात्रों की अधिगम कठिनाई को हल करने में इसका प्रयोग किया जाता है।

अनुवर्ग शिक्षण के जनतंत्रात्मक तथा प्रभुत्ववादी दोनों की व्यूह-रचना माना जाता है। व्याख्यान शिक्षण विधि में छात्रों की व्यक्तिगत कठिनाइयों को हल करने का अवसर नहीं मिलता है। इसलिये कक्षा को छोटे-छोटे सजातीय वर्गों में बाँट दिया जाता है। एक अनुवर्ग को एक शिक्षक को सौंप दिया जाता है। यह शिक्षक अपने अनुवर्ग की सभी अध्ययन सम्बन्धी कठिनाइयों के समाधान में सहायता करता है। इस प्रकार के शिक्षण को अनुवर्ग शिक्षण कहा जाता है। इसमें छात्रों की व्यक्तिगत भिन्नता को महत्व दिया जाता है। इसमें उपचारात्मक विधियों का प्रयोग होता है। अनुवर्ग शिक्षण की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित है—

1. व्यक्तिगत भिन्नता का ध्यान रखा जाता है।
2. छात्र-शिक्षक का सम्पर्क निकट का होता है।
3. छात्रों को शैक्षिक निर्देशन दिया जाता है।
4. व्यक्तिगत कठिनाइयों के समाधान का शिक्षण में अवसर मिलता है।
5. उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था की जाती है।

अनुवर्ग शिक्षण प्रायः तीन प्रकार का होता है—

**1. पर्यवेक्षित अनुवर्ग शिक्षण**—इसमें छात्र तथा शिक्षक नियमित रूप से मिलते हैं। छात्र लेखों को पढ़ते हैं और उन पर शिक्षक के प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करते हैं तथा वाद-विवाद करते हैं। यह व्यूह-रचना प्रतिभाशाली छात्रों के लिये अधिक प्रभावशाली मानी जाती है। इसमें पाठ्य-वस्तु की गहनता तथा स्वामित्व को अधिक अवसर प्रदान किया जाता है।

**2. सामूहिक अनुवर्ग शिक्षण**—इस प्रकार का शिक्षण सामान्य स्तर के छात्रों के लिए अधिक उपयोगी होता है। यह उनकी आवश्यकता की पूर्ति करता है। इसमें सामाजिक-मनोविज्ञान की पृष्ठभूमि होना आवश्यक होता है। शिक्षक को सामूहिक गतिशीलता का बोध होना चाहिये।

**3 व्यावहारिक अनुवर्ग शिक्षण**—इनकी सामूहिक तथा व्यक्तिगत दोनों ही परिस्थितियों में प्रयुक्त किया जाता है। इसका प्रयोग क्रियात्मक पक्ष के कौशलों की प्राप्ति के लिए अधिक किया जाता है। इसके लिये छात्रों को प्रयोगशाला, वर्कशाप आदि में कार्य करना पड़ता है। इसके द्वारा शारीरिक कौशल का विकास किया जाता है। इसका प्रयोग प्रौढ़ों के लिये भी प्रभावशाली ढंग से किया जा सकता है, जबकि व्यक्तिगत अनुवर्ग शिक्षण छोटे बालकों के लिये अधिक उपयोगी होता है। अनुवर्ग शिक्षण व्यूह-रचना की सहायता से ज्ञानात्मक तथा भावात्मक पक्षों के उच्च स्तरों के उद्देश्यों की प्राप्ति भली प्रकार की जा सकती है।

अनुवर्ग उपचारात्मक शिक्षण के अनेक लाभ होते हुए भी इसकी कुछ सीमाएँ हैं, जिन्हें नीचे दिया जा रहा है—

(अ) शिक्षक पक्षपातपूर्ण व्यवहार करते हैं और सभी छात्रों की कठिनाइयों में समान रूप से रुचि नहीं लेते हैं।

(ब) अधिक बोलने वाले छात्रों को अधिक अवसर मिल जाता है।

(स) एक शिक्षक सभी विषयों की कठिनाइयों के समाधान में समर्थ नहीं होता है और अपने विषय में अधिक रुचि लेता है।

(द) कक्षा के वर्गों में स्पर्धा की भावना का विकास हो जाता है जो उचित नहीं।

समान योग्यता अथवा एक-सी कठिनाई वाले छात्रों को एक वर्ग में रखना चाहिये जिससे उनकी कठिनाइयों के लिये उपचारात्मक शिक्षण भली प्रकार से व्यवहृत किया जा सके।

●●

Scanned with CamScanner

Semester II

Hindi Pedagogy. 7A

Unit: (iv) 3. निदानात्मक एवं उपचारात्मक कार्य / शिक्षण

a. निदानात्मक परीक्षाओं का अर्थ और महत्व
b. कठिनाइयों के कारण
c. निदानात्मक परीक्षाएँ
d. वाचन की- निदानात्मक परीक्षाएँ
e. कठिनाइयों का निदान
f. वाचन की- परीक्षाएँ
g. उपचारात्मक शिक्षण
h. अनुवर्ग शिक्षण

By: —

Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

## कठिनाइयों का निदान

वाचन सम्बन्धी निदानात्मक परीक्षा के परिणाम डॉ. प्रेसी के प्रयत्नों के द्वारा बहुत ही महत्त्वपूर्ण रहे हैं। उन्होंने कुछ सामान्य उपकरणों का सुझाव दिया है जिसके द्वारा एक ही अध्यापक छात्रों की वाचन सम्बन्धी कठिनाइयों का पता लगाने में समर्थ हो सकता है। वे सामान्य उपकरण निम्न प्रकार के हैं–

(i) एक छोटा शीशा।

(ii) पढ़ने का उपयुक्त फोल्डर।

(iii) एक पुस्तक।

(iv) छात्र का लेखन पत्र।

Scanned with CamScanner

इन वस्तुओं से मुख्यतः 3 बातों का मापन किया जा सकता है—

(i) नेत्र कार्यशीलता।

(ii) शब्द उच्चारण।

(iii) कुछ वे तत्त्व जो शब्द भण्डार की वृद्धि में सहायक होते हैं।

**प्रेसी वाचन की निदानात्मक परीक्षा**—3 से 9 तक[1]—इस शब्द भण्डार की परीक्षा के शब्द थार्नडाइक की दस हजार सामान्य शब्दों की सूची से लिये गये हैं और उन्हें इस क्रम में लिखा गया है कि जहाँ तक छात्र पढ़ ले उसमें दो शून्य बढ़ा देने से उसके शब्द भण्डार का पता चल जाता है। यदि कोई छात्र इस सूची में से 40 शब्द पढ़ लेता है तो उसका शब्द भण्डार दिन-प्रतिदिन के प्रयोग से दस हजार शब्दों में से 4000 माना जाता है।

इससे छात्रों की वाचन योग्यता का पता लग जाता है। अध्ययनों के आधार पर कहा जा सकता है कि जो छात्र वाचन में कमजोर होते हैं उनके निम्नलिखित कारण होते हैं—

(i) वाचन की परीक्षा को कोई स्थान नहीं दिया जाता।

(ii) शारीरिक दोष।

(iii) दृष्टि सम्बन्धी दोष।

(iv) घर की दयनीय दशा।

(v) हीन बुद्धि।

(vi) बाँए हाथ से काम कराने का अभ्यास।

(vii) भावनामय होना।

(viii) रुचि का अभाव।

(ix) पढ़ने के अभ्यास का अभाव।

(x) पढ़ने की गलत विधि अपनाना।

निदान करने से पूर्व हमें छात्रों की कठिनाइयों का पता चलाना आवश्यक है। इसके पश्चात् उपाय करने के लिए आपस में छात्र वाद-विवाद करके अपनी-अपनी कमियाँ व्यक्त करते हैं और उन त्रुटियों को कम करने के उपाय खोजते हैं।

इस सम्बन्ध में निम्नलिखित सुझाव और दिये गये हैं—

(i) जहाँ छात्र कठिनाई अनुभव करे वहीं से पुनः वाचन करवाया जाय।

(ii) छात्र को उसकी प्रगति का ज्ञान होना चाहिए।

(iii) विद्यार्थी को उचित प्रोत्साहन दिया जाना भी एक उपचार है।

(iv) उपचार की एक ही विधि को बार-बार काम में लाना उचित नहीं। इससे विद्यार्थी नीरसता अनुभव करता है।

(v) जो विधि प्रयोग में लायी जाये वह विद्यार्थी की रुचि और स्तर के अनुसार हो तो उत्तम रहेगा।

हमारे देश में निर्दानात्मक परीक्षाओं का अभाव है जिसके कारण हम कठिनाइयों से परिचित होने में असमर्थ रहते हैं। इसके फलस्वरूप विद्यार्थियों का स्तर दिन-प्रतिदिन गिरता जा रहा है। यह भी स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा है कि विद्यार्थियों की योग्यता प्रत्येक क्षेत्र में दिन-प्रतिदिन गिरती जा रही है।

इतना होते हुए भी आजकल अध्यापक गिरते हुए स्तर को रोकने एवं उसे उन्नत करने के लिए किसी भी प्रकार के प्रयत्न नहीं करते हैं और न ही स्तर के गिरने के कारणों की खोज करते हैं। अतः इस क्षेत्र में सुधार लाने तथा विद्यार्थियों का शैक्षणिक स्तर उत्पन्न करने के लिए अध्यापकों में कार्यशीलता, त्याग और राष्ट्रीय भावनाओं का होना परमावश्यक है।

Scanned with CamScanner

Semester II

Hindi Pedagogy. 7A

Unit: (iv) 3. निदानात्मक एवं उपचारात्मक कार्य / शिक्षण

a. निदानात्मक परीक्षाओं का अर्थ और महत्व
b. कठिनाइयों के कारण
c. निदानात्मक परीक्षाएँ
d. वाचन की- निदानात्मक परीक्षाएँ
e. कठिनाइयों का निदान
f. वाचन की- परीक्षाएँ
g. उपचारात्मक शिक्षण
h. अनुवर्ग शिक्षण

By: —

Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

## कठिनाइयों के कारण

निदानात्मक परीक्षाएँ लेने से पूर्व हमें उन कारणों की खोज करनी होगी जिनके कारण विद्यार्थी किसी विषय में कमजोर रह जाता है। ये कारण मुख्यतः निम्नलिखित हैं—

1. **मन्द बुद्धि**—प्रत्येक कक्षा में कुछ मन्द बुद्धि विद्यार्थी होते हैं, कक्षा में सभी विद्यार्थी समान योग्यता के नहीं होते। सामान्यतया प्रत्येक कक्षा में जहाँ कुछ विद्यार्थी योग्य होते हैं वहाँ कुछ औसत बुद्धि एवं कुछ मन्द बुद्धि के भी अवश्य होते हैं। अतः सभी विद्यार्थी कक्षा की प्रगति के साथ-साथ प्रगति नहीं कर सकते हैं।

2. **हीन भावना**—कुछ विद्यार्थी हीन भावना से पीड़ित होते हैं। उनकी हीनता के वैसे तो बहुत से कारण होते हैं, किन्तु इन सबका मूल कारण पाठशाला और घर ही होते हैं। हीन भावना से प्रेरित विद्यार्थी प्रश्न का ठीक उत्तर जानते हुए भी कक्षा में बोलते हुए झिझकता है जिसके फलस्वरूप वह कक्षा के साथ-साथ प्रगति करने में असमर्थ प्रतीत होता है।

3. **अंगीय दोष**—इसके अन्तर्गत कई प्रकार के शारीरिक दोष आते हैं जिनमें मुख्यतः आँख व कान हैं। इन कमियों से छात्र निश्चित रूप से कक्षा के स्तर से गिरे हुए रहते हैं, इसके अतिरिक्त हकलाना भी छात्र की प्रगति में बाधा उत्पन्न करता है।

Scanned with CamScanner

**4. भावनामय**—भावनामय छात्र वे होते हैं जो जल्दी ही अपनी भावना के प्रभाव से प्रभावित हो जाते हैं। ये अपनी भावनाओं के वशीभूत होकर अपना सन्तुलन खो बैठते हैं और क्रोध के वशीभूत हो जाते हैं। ऐसे छात्र भी कक्षा में साथ-साथ चलने में असमर्थ होते हैं।

**5. रुचि का अभाव**—कुछ छात्र ऐसे होते हैं जिनकी रुचि किसी विषय विशेष के प्रति नहीं होती, किन्तु पाठ्यक्रम के वशीभूत होकर उन विषयों को पढ़ने के लिए उन्हें विवश होना पड़ता है, ऐसे छात्र कक्षा 8 तक ही अधिक दिखाई देते हैं, क्योंकि यहाँ तक विषय अधिक होते हैं और लगभग उन सभी को इच्छा या अनिच्छा से पढ़ना पड़ता है।

**6. दोषपूर्ण अध्यापन**—आज की शिक्षा बाल-केन्द्रित है, सभी ओर से यह सुनाई देता है कि अध्यापक को विषय पढ़ाने पर अधिक बल न देकर छात्र के विकास पर विशेष महत्त्व देना चाहिए। छात्र के महत्त्व देने की दृष्टि से उस पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान दिया जाना आवश्यक है, किन्तु पाठ्यक्रम में दिये गये विषय विस्तार एवं छात्रों की संख्या की अधिकता के साथ-साथ अध्यापक की आलसी-वृत्ति के कारण इस बात पर विशेष ध्यान दिया ही नहीं जाता। साथ ही छात्र-गण पढ़ाए हुए पाठ को भली प्रकार ग्रहण कर सकते हैं अथवा नहीं, इस ओर भी कम ध्यान रहता है।

Scanned with CamScanner

Semester II

Hindi Pedagogy. 7A

Unit: (iv) 3. निदानात्मक एवं उपचारात्मक कार्य / शिक्षण

a. निदानात्मक परीक्षाओं का अर्थ और महत्व
b. कठिनाइयों के कारण
c. निदानात्मक परीक्षाएँ
d. वाचन की- निदानात्मक परीक्षाएँ
e. कठिनाइयों का निदान
f. वाचन की- परीक्षाएँ
g. उपचारात्मक शिक्षण
h. अनुवर्ग शिक्षण

By: —

Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

## निदानात्मक परीक्षाओं का अर्थ और महत्त्व

निदानात्मक परीक्षाओं से विद्यार्थियों के स्तर का पता नहीं लगाया जाता, बल्कि यह पता लगाया जाता है कि विद्यार्थियों को किसी विषय के समझने में कहाँ कठिनाई का अनुभव होता है।

इस परीक्षा में किसी विषय के पढ़ने में जो मानसिक प्रक्रिया होती है उसका विश्लेषण करना पड़ता है। जैसे किसी विषय के पढ़ने में आयु, अक्षरों का आकार, रोशनी, दूरी इत्यादि प्रभाव डालती हैं तो हमें प्रत्येक तत्त्व की परीक्षा करनी पड़ेगी ताकि हम जान सकें कि कौन-सी बात विद्यार्थी को अच्छी तरह पढ़ने में कठिनाई उत्पन्न करती है।

निदानात्मक परीक्षाओं में बुद्धि परीक्षा और सामर्थ्य की तरह निश्चित समय नहीं दिया जाता। इस प्रकार की परीक्षाएँ बिना किसी समय की पाबन्दी के की जाती हैं और कहीं-कहीं पर एक बार या कई बार भी की जाती हैं, क्योंकि इन परीक्षाओं का उद्देश्य बालकों की कठिनाइयों का पता लगाना है तो उन्हें किसी विषय विशेष के पढ़ने में हुई हैं और जिसके कारण वे कक्षा की प्रगति के साथ सामान्य रूप से प्रगति करने में असमर्थ रहते हैं।

कक्षा में अध्यापकों के लिए ऐसे विद्यार्थियों को जानना आवश्यक होता है जिससे वे उनकी कमजोरियों का पता लगाकर आवश्यक निर्देश दे सकें।

निदान शब्द का प्रयोग साधारणतया डॉक्टरी विद्या में किया जाता है, जब भी कोई मरीज डॉक्टर के पास चिकित्सा के लिए आता है तो वह रोग का निदान करने के उपरान्त ही उसकी उपयुक्त चिकित्सा करता है। यदि डॉक्टरों की निदान प्रणाली में किसी प्रकार की त्रुटि रह जाती है तो उस रोगी का स्वास्थ्य भी शीघ्रता से ठीक नहीं होता। इसी प्रकार अध्यापक भी यदि किसी विद्यार्थी की कमजोरियों के कारणों का पता लगाने में भूल कर जावे तो उसके निर्देश भी उतने सफल नहीं होंगे।

Scanned with CamScanner

Semester II

Hindi Pedagogy. 7A

Unit: (iv) 3. निदानात्मक एवं उपचारात्मक कार्य / शिक्षण

a. निदानात्मक परीक्षाओं का अर्थ और महत्व
b. कठिनाइयों के कारण
c. निदानात्मक परीक्षाएँ
d. वाचन की- निदानात्मक परीक्षाएँ
e. कठिनाइयों का निदान
f. वाचन की- परीक्षाएँ
g. उपचारात्मक शिक्षण
h. अनुवर्ग शिक्षण

By: —

Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

## निदानात्मक परीक्षाएँ

इस प्रकार की परीक्षाएँ कमजोर छात्रों के कारणों का पता लगाने के लिए ली जाती हैं। अतः इन परीक्षाओं को लेने से पूर्व यह ज्ञात करना नितान्त आवश्यक है कि कक्षा में कमजोर छात्र कौन-कौन से हैं। इसके लिए पहले योग्यता की परीक्षाएँ लेनी आवश्यक हैं।

योग्यता सम्बन्धी परीक्षा लेने में कई शैक्षणिक विषयों की सहायता ली जा सकती है, क्योंकि कक्षा में जो विषय पढ़ाये जाते हैं उनसे यह समझा जाता है कि इनसे छात्र की योग्यता में वृद्धि होती है। यदि सम्भव हो तो अध्यापक स्वयं भी इसका निर्माण कर सकता है। योग्यता की परीक्षा लेने के बाद अध्यापक के समक्ष कक्षा का स्पष्ट चित्र आ जाता है तथा वह जान जाता है कि कक्षा में कितने छात्र योग्य, कितने औसत तथा कितने कमजोर हैं और वे छात्र कौन-कौन से हैं।

इसके पश्चात् उन छात्रों की कमजोरी के कारणों का पता लगाने के लिए निदानात्मक परीक्षा ली जा सकती है।

निदानात्मक परीक्षाओं के विचार में हम अपने को भाषा शिक्षण तक ही सीमित रखेंगे।

Scanned with CamScanner

Semester II

Hindi Pedagogy. 7A

Unit: (iv) 3. निदानात्मक एवं उपचारात्मक कार्य / शिक्षण

a. निदानात्मक परीक्षाओं का अर्थ और महत्व
b. कठिनाइयों के कारण
c. निदानात्मक परीक्षाएँ
d. वाचन की- निदानात्मक परीक्षाएँ
e. कठिनाइयों का निदान
f. वाचन की- परीक्षाएँ
g. उपचारात्मक शिक्षण
h. अनुवर्ग शिक्षण

By: —

Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

## उपचारात्मक शिक्षण

छात्रों की अधिगम कठिनाई में सहायता प्रदान करने के लिये उपचारात्मक शिक्षण की निश्चित प्रक्रिया नहीं है। क्योंकि उपचारात्मक शिक्षण व्यक्तिगत अधिक होता है। प्रत्येक छात्र की अधिगम कठिनाई पृथक् होती है। अतः प्रत्येक छात्र के लिये अलग-अलग उपचारात्मक शिक्षण की आवश्यकता होती है। किन्हीं परिस्थितियों में पुनर्शिक्षण से ही अधिगम कठिनाई दूर हो जाती है। अन्य परिस्थितियों में उपचारात्मक शिक्षण के स्थान अभिप्रेरणा या पुनर्बलन का प्रयोग किया जाता है तो कभी-कभी अन्य प्रक्रियाओं का प्रयोग किया जाता है। अधिगम की कठिनाई की प्रकृति तथा उसके कारण को ध्यान में रखकर विशिष्ट प्रकार के उपचारात्मक शिक्षण का प्रयोग किया जाता है।

उपचारात्मक शिक्षण में परीक्षण तथा मूल्यांकन महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उपचारात्मक शिक्षण के समय में जो परीक्षण किया जाता है उसके निम्नलिखित कार्य होते हैं—

1. छात्रों की विशेष प्रकार की अनुक्रियाओं का स्पष्टीकरण।
2. छात्रों की अधिगम समस्या के कारण ज्ञात करने के लिये निदानात्मक परीक्षा का प्रयोग।
3. परीक्षण के अभ्यास से सफलता की अनुभूति करना।
4. तात्कालिक परिणाम द्वारा छात्र को पुनर्बलन प्रदान करना।
5. उपचारात्मक शिक्षण की प्रभावशीलता के सम्बन्ध में जानकारी होना।

उपचारात्मक शिक्षण का तात्कालिक लक्ष्य, छात्र की अधिगम समस्या तथा कठिनाई को हल करना है तथा अन्तिम लक्ष्य छात्रों में स्वामित्व अधिगम में सहायता प्रदान करना है। मूल्यांकन की प्रक्रिया निदान तथा उपचार की प्रत्येक अवस्था पर प्रयोग की जाती है।

---

1. Burt, C., *Mental and Scholastic, Tests, IV Ed., p.* 506.
2. Translation of Cyrill Burt—*Mental and Scholastic Test. IV* Edition, p. 450.

Scanned with CamScanner

Semester II

Hindi Pedagogy. 7A

Unit: (iv) 3. निदानात्मक एवं उपचारात्मक कार्य / शिक्षण

a. निदानात्मक परीक्षाओं का अर्थ और महत्व
b. कठिनाइयों के कारण
c. निदानात्मक परीक्षाएँ
d. वाचन की- निदानात्मक परीक्षाएँ
e. कठिनाइयों का निदान
f. वाचन की- परीक्षाएँ
g. उपचारात्मक शिक्षण
h. अनुवर्ग शिक्षण

By: —

Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

## वाचन की निदानात्मक परीक्षाएँ

आजकल वाचन के क्षेत्र में अत्यधिक अवनति हो रही है। अनुभव के आधार पर हम कह सकते हैं कि आज से 20 वर्ष पूर्व जो कुशलता वाचन में एक पाँचवीं या छठी कक्षा के विद्यार्थी में होती थी वह आजकल कक्षा 11 और 12 वाले छात्र में होना कठिन है।

**वाचन में कठिनाइयों के कारण**—इसका मुख्य कारण यह है कि आजकल मुख्य ध्येय परीक्षा पास करना है न कि कुशलताओं की वृद्धि और आजकल वाचन की परीक्षा प्रथम एवं द्वितीय कक्षा को छोड़कर अन्य किसी कक्षा में होती ही नहीं है। इसी कारण छात्रों की वाचन शक्ति का दिन-प्रतिदिन ह्रास होता जा रहा है। यदि शिक्षाशास्त्रियों ने शीघ्र ही इस ओर ध्यान नहीं दिया तो इसका भविष्य और भी अन्धकारमय हो जाने की सम्भावना है।

Scanned with CamScanner

Semester II

Hindi Pedagogy. 7A

Unit: (iv) 3. निदानात्मक एवं उपचारात्मक कार्य / शिक्षण

a. निदानात्मक परीक्षाओं का अर्थ और महत्व
b. कठिनाइयों के कारण
c. निदानात्मक परीक्षाएँ
d. वाचन की- निदानात्मक परीक्षाएँ
e. कठिनाइयों का निदान
f. वाचन की- परीक्षाएँ
g. उपचारात्मक शिक्षण
h. अनुवर्ग शिक्षण

By: —

Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

## वाचन की परीक्षाएँ

शैक्षिक उन्नति को जाँचने के लिए कोई भी इतनी सरल, उपयोगी और विश्वसनीय परीक्षा नहीं है जैसी कि बिने साइमन की बुद्धि मापक परीक्षा। फिर भी मनोवैज्ञानिकों और अध्यापकों ने कुछ परीक्षाओं का निर्माण किया है जिनका पूरा-पूरा लाभ उठाया जा सकता है।

---

1. Pressey Diagnostic Reading Tests for classes III to IX. L.C. Pressey, (Published by the Public School Publishing Company.)

Scanned with CamScanner

## वाचन की परीक्षाओं के उद्देश्य

1. यांत्रिक यथार्थता।
2. प्रवाह या गति।
3. अभिव्यक्ति।
4. समझने की क्षमता।

**1. यांत्रिक यथार्थता**—खेद का विषय है कि हिन्दी में अभी ऐसी परीक्षाएँ उपलब्ध नहीं हैं, अतः हमें अंग्रेजी की परीक्षाओं का ही सहारा लेना पड़ता है।

यांत्रिक यर्थाथता को मापने के लिए बैलार्ड की परीक्षा है जिसमें 158 सामान्य शब्द हैं, जिनको पढ़ाने के लिये एक मिनट का समय निर्धारित किया गया है।

यदि कोई परीक्षार्थी किसी शब्द पर 5 सेकण्ड से ज्यादा हिचकता है, तो उसे आगे बढ़ने का आदेश दे दिया जाता है और उस शब्द को एक गलती मान लिया जाता है।

एक मिनट तक पढ़ने के बाद उसे रुकने को कहा जाता है और निम्न विधि से उसकी सही संख्या निकाल लेते हैं—

कुल अंक = समस्त पढ़े हुए शब्द—गलतियाँ।

यदि किसी परीक्षार्थी ने एक मिनट में 80 शब्द पढ़े और उनमें 10 शब्द गलत पढ़े तो उनका प्राप्तांक इस प्रकार होगा—

प्राप्तांक = 80–10 = 70

कुल प्राप्तांक = 70 शब्द प्रति मिनट।

बैलार्ड ने इस परीक्षा को 49 विद्यालयों में देकर निम्न प्रतिमान[1] दिये हैं—

| आयु (वर्ष) | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 14 |
|---|---|---|---|---|---|---|
| लड़कों के प्राप्तांक | 13 | 33 | 53 | 72 | 85 | 115 |
| लड़कियों के प्राप्तांक | 15 | 38 | 56 | 76 | 88 | 122 |

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि लड़कों की अपेक्षा लड़कियों ने अधिक अंक प्राप्त किये हैं।

**2. गति की जाँच**—प्रवाह को मापने के लिए परीक्षा में आवश्यक है कि कठिनाई प्रारम्भ से लेकर अन्त तक एक-सी रहनी चाहिए और वह भी विद्यार्थियों की सामर्थ्य के अनुकूल होनी चाहिए। इस प्रकार की एक-एक परीक्षा बर्ट[2] ने बनाई है।

इस परीक्षा में 200 शब्द हैं और अधिकांश शब्द 3 अक्षरों के हैं, परन्तु कुछ शब्द 2 अक्षरों के भी हैं।

प्रवाह को मापने के लिए परीक्षार्थियों से कहा जाता है कि इसे जितनी जल्दी पढ़ सकते हो पढ़ो और जब रुकने के लिए कहा जाये तो रुक जाओ।

इस परीक्षा के आधार प्रर प्रवाह दो रूपों में मापा जा सकता है—

1. निश्चित समय में कितना पढ़ा।
2. कुल प्रश्न-पत्र कितने समय में पढ़ा।

पहले के अनुसार परीक्षार्थियों को निश्चित समय 60 सेकण्ड दिया जाता है और जब घड़ी आखिरी सेकण्ड बताती है उसी समय रुकने के लिये कहा जाता है। इस तरह उसके प्रवाह की जाँच हो जाती है। मान लीजिये कि एक मिनट में छात्र ने 100 शब्द पढ़े तो उसका प्रवाह पढ़ने में 100 शब्द प्रति मिनट होगा।

दूसरा तरीका यह है कि जब परीक्षार्थी से प्रारम्भ करने के लिए कहा जाता है तो समय नोट कर लेते हैं और वह पूर्ण प्रश्न-पत्र को पढ़ लेता है तो उस समय को भी लिख लिया जाता है। इस प्रश्न में 200 शब्द हैं और काई परीक्षार्थी 3 मिनट लेता है तो उसका प्रवाह 200/3 = 66.6 शब्द प्रति मिनट होगा। बर्ट ने इस परीक्षा का प्रतिमान भी दिया है।

---

1. Ballard and Burt, C., *Mental and Scholastic Tests*, IV Ed. p. 363.
2. Burt, C., C., *Mental and Scholastic Tests*, IV Ed. p. 363.

Scanned with CamScanner

**एक मिनट में सही शब्द पढ़ने की संख्या**

| आयु वर्ष | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लड़के | 22.2 | 52.4 | 65.0 | 82.5 | 100.8 | 108.7 | 119.5 | 123.6 | 127.3 |
| लड़कियाँ | 25.6 | 57.3 | 71.1 | 86.3 | 103.5 | 112.8 | 123.4 | 128.9 | 130.7 |
| हीन बच्चे | 0.00 | 1.1 | 4 | 12.3 | 18.8 | 25.7 | 31.9 | 35.0 | 38.5 |

**3. अभिव्यक्ति**—अभिव्यक्ति को मापने के लिये कुछ औसत पढ़ने वालों की आवश्यकता होती है। बर्ट ने कुछ पढ़ने वालों को मशीन के पास पढ़ने के लिये कहा जिससे बाद में भी लिखा और सुना जा सकता था, परन्तु इससे कोई निश्चित निर्णय नहीं निकल सका, अतः अभिव्यक्ति के लिए कोई निश्चित परीक्षा उपलब्ध नहीं है।

**4. समझने की क्षमता**—समझने की क्षमता को कई प्रकार से मापा जा सकता है जिनमें सबसे साधारण और आसान प्रकार प्रतिलिपि का है। विद्यार्थी से पढ़े हुए पाठ का सारांश लिखने के लिये कहा जाता है।

बर्ट ने समझने की क्षमता को मापने के लिये आयु के अनुसार अलग-अलग परीक्षाएँ बनाई हैं जिनमें से कुछ निम्नलिखित[2] हैं—

Scanned with CamScanner